© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महाकाव्य में निहित आवश्यक तत्व

ऋतु राज
शोधच्छात्र (JRF)
विषय-संस्कृत
नेहरू ग्राम भारती मानित
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

शोध आलेख सार - भारतीय विद्वानों ने महाकाव्य का उद्देश्य चतुर्वर्ग फल-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति को माना गया है। जिसके अन्तर्गत मनुष्य के जीवन की सम्पूर्ण कामनाओंए मनोरथों एवं उद्देश्यों का अन्तभाव हो जाता है। महाकाव्य का उद्देश्य मानवता की विजयपताका फहराना, दुर्गुणों एवं कुरितियों का विनाश, असत्य पर सत्य की विजय तथा अन्याय पर न्याय की विजयए लोक कल्याण का मार्ग प्रसस्थ करना है।

मुख्य शब्द - महाकाव्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सर्ग, नायक।

महाकाव्य मनुश्य के जीवन को उनकी सम्पूर्णता में उपस्थित करता है। उसका मूल स्वरूप इतिहास एवं पुराण है। इतिहास और पुराण दोनों में जीवन और जगत को विराट फलक पर चित्रित किया जाता था और इन दोनों का यह मूल, ढांचा लेकर महाकाव्य स्वतंत्र काव्य विधा के रूप में प्रतिश्ठित हुआ।

महाकाव्य भाब्द की व्युत्पत्ति दो भाब्दों से मिलकर हुई है महत्+काव्य। महत् भाब्द का भााब्दिक अर्थ है–श्रेश्ठ, बड़ा या गरिमामयी तथा काव्य का अर्थ है– कवेः कर्मम् (कवि का कर्म) अर्थात वर्णना में निपुण कवि का कर्म ही काव्य होता है। इस प्रकार कवियों के श्रेश्ठ, बड़ी, गरिमामयी रचनाओं को महाकाव्य कहते है।

महाकाव्यों में कुछ तत्वों का होना बहुत ही आव यक है जिसके बिना महाकाव्य की कल्पना करना असम्भव सा प्रतीत होता है। उन्ही महत्वपूर्ण तत्वों का विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

कथानक –

महाकाव्य का कथानक सर्गों में विभक्त होना चाहिए, ऐसा भारतीय विद्वानों का मानना है। परन्तु आधुनिक विद्वान कथानक को खण्डों में विभक्त करने के पक्षधर है जिसे सर्गों में होना अनिवार्य नही मानते क्योंकि खण्डों के अर्न्तगत ही सर्ग, परिच्छेद, काण्ड, पर्व, प्रका ा आदि का अर्न्तभाव हो जाता है। महाकाव्य का कथानक सुसंगठित और व्यापक होना चाहिए। यह कथानक, इतिहास, पुराणा, प्राचीन महाकाव्य, दन्तकथा तथा समसामयिक घटना या व्यक्ति पर आधारित होना चाहिए। आचार्य रूद्रट के अनुसार कथानक कल्पना मूलक भी हो सकता है परन्तु जहॉ तक हो सके काल्पनिक कथानक का निर्माण नही करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से कथानक लोक विख्यात नही हो सकता। इस बात पर भारतीय विद्वान तथा पा चात्य विद्वान भी बल देते है। महाकाव्य का कथानक विस्तृत होना चाहिए जिसमें मानव जीवन के सभी पक्षों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए यदि महाकाव्य का कथानक छोटा हो तो उसमें अवांन्तर कथाओं और उपाख्यानों की योजना करके जीवन के विविध परिस्थितियों का चित्रण किया जा सकता है। भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य में पाँच नाट्य संधियों का होना आव यक माना है। महाकाव्य का कथानक सुसंगठित एवं श्रृंखलाबद्ध होना चाहिए। महाकाव्य में आने वाले विविध प्रसंग, उपाख्यान तथा वर्णन अधिकारिक कथा से सम्बद्ध होने चाहिए। महाकाव्य के कथानक में अति प्राकृतिक और आलौकिक तत्वों का समावे ा किया जा सकता है, किन्तु असम्भव घटनाओं को इस प्रकार चित्रित नही किया जाना चाहिए जिससे कि वो असम्भव सा प्रतीत हो।

उदान्त चरित्र चित्रण

महाकाव्य के तत्वों में चरित्र–चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। महाकाव्यों में विभिन्न प्रकार के पात्रों का **समावेश** होता है। उन पात्रों की चरित्रगत दुर्बलताओं और वि ोशताओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण करना ही चरित्र चित्रण कहलाता है। महाकाव्यों में दो प्रकार के पात्रों का वर्णन मिलता है।

1. मुख्य पात्र (नायक) 2. सामान्य पात्र

महाकाव्य में नायक को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नायक का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कथानक की सभी घटनाओं और पात्रों पर स्पशट रूप से छाया रहता है और महाकाव्य की घटनाओं को नियमित रूप से गति प्रदान करता है। महाकाव्य का नायक ऐसा महान व्यक्ति होता है जो किसी नि श्चित उद्दे य की प्राप्ति

के लिए सभी प्रकार की विपत्तियों को सहन करके अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है। इस प्रकार वह समस्त राश्ट्र या जाति की भावनाओं और आदर्शों का मर्यादित रूप से प्रतिनिधित्व करता है। नायक में कुछ दुर्बलताएँ हो सकती है, किन्तु कुल मिलाकर उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रभावित करने वाला और आदर्श की स्थापना करने वाला होना चाहिए।

महाकाव्य में नायक के अतिरिक्त अन्य सामान्य चरित्र के पात्र भी होते है। जो समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते है। उनमें कुछ साधु चरित्र के कुछ असाधु चरित्र के तथा कुछ ऐसे चरित्र के व्यक्ति होते है, जिनमें मानवोचित दुर्बलताएँ और सबलताएँ दोनों विद्यमान रहती है। इन सामान्य पात्रों में कुलटा–पतिव्रता, दूती–सखी, कन्या–युवती, वृद्धा रानी, चेटी आदि स्त्रियाँ तथा राजा, मंत्री, युवराज, परिजन तथा अन्य पात्र विभिन्न प्रकार के अच्छे–बुरे, क्रूर–दयालु, स्वार्थी–परमार्थी, उच्च–नीच आदि व्यक्तियों का समावे ा होता है।

रसाभिव्यक्ति

रस महाकाव्य का एक आव यक तत्व है। आचार्य वि वनाथ ने महाकाव्य में श्रृंगार, वीर एवं भाान्त रसों में से एक अंगी रस होना चाहिए तथा अन्य रसों का प्रयोग गौण रूप से प्रयोग होना आव यक माना है। यद्यपि संस्कृत साहित्य में ऐसे ही महाकाव्य मिलते है जिनमें उक्त तीनों प्रायः रसों का प्राधान्य है फिर भी आधुनिक विद्वान रसों की सीमा को बांधने को तैयार नही है। एक महाकाव्यकार को विभाव अनुभाव एवं संचारी भावों के द्वारा रसों की व्यंजना करनी चाहिए। महाकाव्य में विविध रसों की योजना मात्र पर्याप्त नही है, अपितु रसाभिव्यक्ति में तीव्रता भी अपेक्षित है। रसाभिव्यक्ति में तीव्रता तभी आती है जब विविध अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में पड़कर पात्रों की मनःस्थिति कैसी है? इसके चित्रण की ओर महाकाव्यकार को सदैव सचेश्ट रहना चाहिए, आचार्य वि वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा माना है।?

प्रकृति वर्णन

महाकाव्य में प्रकृति वर्णन एक महत्वपूर्ण तत्व है। महाकाव्य में प्रकृति तथा इसके विविध विशयों का मनोहारी वर्णन होना चाहिए। संस्कृत साहित्य के अनुसार सूर्योदय, चन्द्रोदय, रात्रि, प्रभात, संध्या, वन, नदी, पर्वत, ऋतु, समुद्र, युद्ध, मंत्रणा, सुरापान, संयोग एवं वियोग आदि वर्णनों का महाकाव्य में प्रयोग होना चाहिए। वस्तुवर्णन द्वारा ही महाकाव्यकार जीवन की झांकी प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। महाकाव्य में प्रकृति वर्णन का

समावे ा संदर्भ के अनुकूल और कथानक का अंग बनाकर करना चाहिए जिससे वे अलग से प्रतीत न हो। प्रकृति वर्णनन महाकाव्य की घटनाओं और कथानक के प्रवाह में बाधक न हो अपितु साधक के रूप में हो।

छन्दोबद्धता

महाकाव्य समाख्यानात्मक पद्यबद्ध रचना है और पद्य की रचना छन्द में होती है। इस प्रकार महाकाव्य को छन्दोबद्ध रचना कहा जाता है। कवि पारस्परिक छन्दों के साथ नवीन छन्दों का प्रयोग अपने महाकाव्य में कर सकता है। महाकाव्य में किस प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया जाय इसका कोई नियम निर्धारित नही किया जा सकता है। वह तो कवि के अपने दृश्टिकोण की उपज है पर छन्दों का चयन अर्थ के अनुरूप हो इस ओर उसे अव य ध्यान देना चाहिए।

भाशा भौली

महाकाव्य की भाशा में पौढ़ता और प्रांजलता अति आव यक है। इसे भी महाकाव्य के तत्व के अन्तर्गत रखा जाता है। महाकाव्य का विशय व्यापक होता है उसमें मानव के सम्पूर्ण जीवन की सरस अभिव्यक्ति का चित्रण करने में कठिनाई का अनुभव नही होता। महाकाव्य में विभिन्न परिस्थितियों में पड़कर पात्र के क्रिया कलापों एवं मनोद ा में क्या परिवर्तन आ जाय, इसके लिए महाकाव्यकार को सतत् जागरूक होना चाहिए तभी उसके चरित्र चित्रण में उदारता एवं भालीनता का समावे ा सम्भव है।

प्रयोजन

महाकाव्य का उद्दे य चाहे आध्यात्मिक हो या भौतिक प्रत्येक द ा में वह जीवनोपयोगी व उच्च आदर्शों वाला होना चाहिए। भारतीय विद्वानों ने महाकाव्य का उद्दे य चतुर्वर्ग फल–धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति को माना गया है। जिसके अन्तर्गत मनुश्य के जीवन की सम्पूर्ण कामनाओं, मनोरथों एवं उद्दे यों का अर्न्तभाव हो जाता है। महाकाव्य का उद्दे य मानवता की विजयपताका फहराना, दुर्गुणों एवं कुरितियों का विना ा, असत्य पर सत्य की विजय तथा अन्याय पर न्याय की विजय, लोक कल्याण का मार्ग प्रसस्थ करना है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

क्र.	ग्रन्थ	ग्रंथकार	प्रका ाक	प्रका ान वर्श
1	संस्कृत साहित्य का वृहद इतिहास	डॉ0बलदेव उपाध्याय	उ0प्र0संस्कृत संस्थान लखनऊ	2000
2	संस्कृत साहित्य का इतिहास	उमा ांकर भार्मा 'ऋशि'	चौखम्बा भारती अकादमी	2016
3	काव्यप्रका ा	आचार्य मम्मट	ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी	2016
4	साहित्य दर्पण	आचार्य वि वनाथ	प्रयाग पुस्तक भवन	2009
5	अर्वाचीन संस्कृत काव्य एवं काव्य ाास्त्र	डॉ0 स्मिता अग्रवाल	अक्षयवट प्रका ान, इलाहाबाद	2018
6	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ0कपिलदेव द्विवेदी	रामनरायण लाल विजय कुमार	